SWAR SINDHU: NATIONAL PEER-REVIEWED/REFEREED JOURNAL OF MUSIC
A UGC CARE LISTED JOURNAL
ISSN 2320-7175 (O) | VOLUME 12, ISSUE 03, DECEMBER, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org

भारतीय संगीत–शिक्षण के परिप्रेक्ष्य में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली

PRADEEP KUMAR[1] & DR. GAGANDEEP HOTHI[2]

[1]Assistant Professor, Department of Music, Dance and Performing Arts, Uttarakhand Open University, Haldwani, Nainital
[2]Assistant Professor, Department of Music, D.S.B Campus, Kumaun University, Nainital

सार

"मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली" वर्तमान में सहज व सुलभ शिक्षा का उपयुक्त माध्यम है। यह समय ऑनलाइन मीडिया एवं इंटरनेट की अधिकता के कारण तकनीक–माध्यम का स्वर्ण–युग है। ऑनलाइन माध्यमों की ग्राह्यता की वजह से शिक्षा के क्षेत्र में ऑनलाइन माध्यमों की स्वीकार्यता बढ़ी है। वर्तमान समय में जहाँ तकनीकी एवं ऑनलाइन मीडिया ने समाज के सभी पहलुओं को प्रभावित किया है वहीं शिक्षा के क्षेत्र में भी इसका व्यापक प्रभाव पड़ा है। 'कोरोना महामारी' के पश्चात् ज्ञान के विभिन्न अनुशासनों के साथ-साथ संगीत–शिक्षण में भी ऑनलाइन माध्यमों की मांग बढ़ी है। प्रस्तुत शोध-पत्र में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में तकनीक के प्रभावों एवं ऑनलाइन माध्यमों की सहायता से भारतीय संगीत-शिक्षण की उपादेयता पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द: *मुक्त शिक्षा, दूरस्थ शिक्षा, ऑनलाइन मीडिया, सांगीतिक शिक्षा, संपर्क कक्षाएँ*

भूमिका

'शिक्षा की "मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली" की विधि का प्रारंभ 18वीं सदी के प्रारम्भिक दिनों में यूरोप में हुआ। इस विधि का प्रथम पाठ्यक्रम सन 1840 में सर "इसाक पिटमैन" द्वारा प्रस्तुत किया गया'।[1] 'मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली' में ऐसे क्रिया-विधियों पर बल दिया जाता है जिससे समय एवं धन की बचत के साथ-साथ नवाचारी शोध एवं विभिन्न ज्ञानानुशासनों के अंतर-विषयक शिक्षा प्रणाली पर बल दिया जा सके। जैसे- आकाशवाणी, टेलीविजन, प्रकशित पाठ्य-सामग्री, कम्प्यूटर, इंटरनेट, ई-मेल, वीडियो कॉनफ्रेंसिंग, टेलीफोनिक इत्यादि'।[1]

इस प्रणाली ने शिक्षा के नए आयामों को दुनिया के समक्ष प्रस्तुत किया है जिसे समाज के सभी वर्गों ने अपनाया है। विश्व भर में कम्प्यूटर एवं इंटरनेट के प्रयोग से "मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली" त्वरित एवं सुलभ हुई है। तकनीक के आने से 'मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा' सर्व-सुलभता पारंपरिक ज्ञानार्जन के माध्यम से तुलनात्मक तौर पर अधिक ग्राह्य हुई है। मुक्त शिक्षा के क्षेत्र में तकनीक ने आमूलचूल बदलाव किए हैं।

इलेक्ट्रोनिक युग में जहाँ हर व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति सुलभता के साथ करना चाहता है वहाँ 'मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली' एक बेहतर विकल्प बन सकता है। यह प्रणाली बिना किसी उम्र, समय एवं स्थान की बाध्यता के विधार्थियों को शिक्षा प्राप्त करने की व्यवस्था प्रदान करती है। इस शोध पत्र के माध्यम से मेरे द्वारा उन सभी विधियों, तकनीकियों एवं विचारों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है जिनसे भावी संगीत कलाकार प्रेरित होंगे और अन्य कलाकारों के लिए प्रेरणा बनेंगे।

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली

'मुक्त शिक्षा' का अर्थ है बिना किसी बाध्यता के शिक्षा ग्रहण करने में सहायता प्रदान करना। दूरस्थ शिक्षा का अर्थ असंस्थागत शिक्षा से है जहाँ शिक्षार्थी शिक्षण संस्थानों से दूर रहकर भी शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रणाली ने दूरस्थ माध्यमों का प्रयोग करके समाज के सभी वर्गों तथा दूरस्थ क्षेत्रों में रहने वाले लोगों तक शिक्षा पहुँचाने के अतुलनीय प्रयास किए हैं। वर्तमान तकनीकी के परिप्रेक्ष्य में संगीतज्ञों एवं विशेषज्ञों को यह समझने का प्रयास करना चाहिए कि "मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली" द्वारा सांगीतिक शिक्षा प्रदान करना संभव है।

'आज के युग में तकनीकी सुविधाओं के चलते हमें "मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली" को स्वीकार करने का प्रयास करना चाहिए। इस प्रणाली ने शिक्षा और शिक्षार्थियों के मध्य की दूरी को कम कर समाज के सभी वर्गों को समान अवसर प्रदान करने का प्रयास किया है। "मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली" वह माध्यम है जिसमें शिक्षार्थी को दूर रहकर शिक्षा प्रदान करने की व्यवस्था प्रदान की जाती है। यह प्रणाली शिक्षार्थियों को ऐसी व्यवस्था प्रदान करती है जिसमें उन्हें किसी भी प्रकार से विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में शिक्षा ग्रहण करने नहीं

जाना पड़ता। यह प्रणाली शिक्षार्थियों को अपने-अपने स्थानों पर रहकर रेडियो, अकाशवाणी, ऑडियो-वीडियो लेक्चर, इंटरनेट एवं कम्प्यूटर आदि माध्यमों से भी संगीत की शिक्षा प्राप्त करने की सुविधा प्रदान करती है'।[2]

यह प्रणाली शिक्षा के व्यवसायिक विकास के संबंध में भी बड़ी उपयोगी साबित हो रही है। संगीत शिक्षा की बात करें तो वर्तमान तकनीकी सुविधाओं का प्रयोग कर इसे आसानी से सीखा और सिखाया जा सकता है। इस प्रणाली की आवश्यकता उन लोगों के लिए अधिक लाभदायक सिद्ध हुई है जो आर्थिक एवं भौगोलिक परिस्थितियों के कारण शिक्षण संस्थानों से दूर हैं। इस प्रणाली द्वारा संगीत की सभी विधाओं; (गायन, वादन एवं नृत्य) का ज्ञान तकनीकी का प्रयोग करके दिया जाता है। यह प्रणाली संगीत के प्रचार एवं प्रसार में भी काफी सहायक है। यह बात महत्वपूर्ण है की इस प्रणाली ने शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में समाज के सभी वर्गों को एक ही मंच पर लाने का अद्भुत प्रयास किया है जो इस प्रणाली की मुख्य विशेषताओं में से एक है।

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के कार्य

यह प्रणाली वर्तमान एवं भविष्य की आवश्यकता है जिसे हम नकार नहीं सकते। यह प्रणाली संगीत कला का विश्लेषण, इतिहास, समीक्षा, संगीत के तत्वों की महत्वपूर्ण जानकारी आदि के क्षेत्र में अहम योगदान दे रही है। जब तक किसी तकनीक को इस्तेमाल नहीं किया जाता है तब तक उसका उपयोग एक संशय का विषय बना रहेगा। "मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली" के समर्थकों ने यह जोखिम उठाया और सिद्ध करने का प्रयास किया कि आधुनिक तकनीकी का प्रयोग शिक्षा के क्षेत्र में किया जा सकता है।

- **स्व–अध्ययन-** "मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली" शिक्षार्थियों को स्व–अध्ययन के अवसर प्रदान करती है। शिक्षार्थी अपने शिक्षण से संबंधित पाठ्यक्रम का स्व–अध्ययन करता है जिससे शिक्षार्थी पर किसी भी शिक्षक या शिक्षण संस्थानों का दबाव नहीं रहता।[3,7,9,11]
- **समूहीकृत अध्ययन-** समूहीकृत अध्ययन में शिक्षकों द्वारा शिक्षार्थियों का एक समूह बनाकर शिक्षा प्रदान की जाती है। इस प्रकार के अध्ययन में वीडियो कांफ्रेंसिंग द्वारा अध्ययन किया जाता है। गूगल मीट तथा जूम आदि एप्लीकेशन इसके उदाहरण हैं।
- **शिक्षण तक पहुँच-** वर्तमान में 'उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय' हल्द्वानी, उत्तराखंड "मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली" के माध्यम से शिक्षा प्रदान कर रहा है। उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय शिक्षार्थियों को एक व्यापक नेटवर्क उपलब्ध कराता है और साथ ही शैक्षिक सलाहकार, परामर्शदाता, अध्यापक, डेस्क कर्मी, अन्य सहयोगी स्टाफ शिक्षार्थियों के लिए उपलब्ध करवाता है जो सदैव ऑनलाइन उपलब्ध रहते हैं। शिक्षार्थी जब चाहे तब उनसे सम्पर्क कर घर बैठे शिक्षा सुचारु रूप से प्राप्त कर सकता है।[7]
- **शिक्षार्थी सहायता-** "मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली" शिक्षार्थियों को अनेक लाभ प्रदान कराती है। शिक्षार्थी अपनी आजीविका के साधनों का त्याग किए बिना रोजगार करते हुए भी 'सांगीतिक शिक्षा' ग्रहण कर सकते हैं। यह प्रणाली 'दिव्यांग जन' जिनके लिए कहीं भी आना-जाना अत्यधिक कष्टप्रद एवं कठिन है उनको भी समान रूप से शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्रदान करती है।[9]
- **लचीलापन-** "मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली" से शिक्षा ग्रहण करने वाले शिक्षार्थियों को अपना नामांकन करने के लिए किसी भी अन्य जगह पर जाने की आवश्यकता नहीं है। शिक्षार्थी किसी भी कार्यस्थल पर बैठकर ऑनलाइन पंजीकरण करवा सकते हैं। वर्ष में दो बार कोई भी पाठ्यक्रम शुरू किया जा सकता है। इस प्रणाली में किसी भी पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने या पाठ्यक्रम को पूर्ण करने में उम्र और समय की कोई बाध्यता नहीं होती है।[7,8]
- **शिक्षार्थी केन्द्रित-** "मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली" शिक्षार्थी की क्षमता एवं समय के अनुकूल ही शिक्षा प्रदान करती है। यह प्रणाली शिक्षार्थी पर केन्द्रित रहती है। शिक्षार्थी अपनी सुविधाओं के अनुसार ही शिक्षा ग्रहण करने में सक्षम है।[7] जहाँ पारंपरिक शिक्षा में कक्षा अध्यापन एवं किताबें प्रमुख होती हैं और छात्रों की भूमिका गौण होती है वहीं मुक्त एवं दूरस्थ मध्यम में शिक्षार्थी ही प्रमुख होते हैं। हरेक क्रिया-विधि शिक्षार्थियों के लिए शिक्षार्थियों के अनुसार उनकी सुविधाओं एवं हितों को केंद्र में रखकर की जाती है।[9]

- **समय की बचत-** यह प्रणाली आने-जाने की व्यर्थ चिंताओं में व्यतीत समय की बचत कराती है। शिक्षार्थियों के लिए यह भी एक चिंता का विषय हो जाता है जब उसे शिक्षा ग्रहण करने काफी दूर जाना पड़ता है। "मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली" शिक्षार्थियों की इन सभी चिंताओं को दूर करने का प्रयास करती है।[9]
- **व्यवसाय के रूप में-** "मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली" न केवल शिक्षा को समाज के हर वर्ग तक पहुँचाने का प्रयास करती है बल्कि शिक्षार्थियों के लिए व्यवसाय के अवसर भी उपलब्ध करवाती है। इस प्रणाली के माध्यम से एक शिक्षित व्यक्ति दूर बैठे अपने विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करने के साथ-साथ उचित पारिश्रमिक भी प्राप्त कर सकता है। यह प्रणाली आपको तकनीकी के क्षेत्र में भी सक्षम बनती है जिसका प्रयोग आप अपने व्यवसाय को समृद्ध बनाने में कर सकते हैं।

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के माध्यम

जैसा कि नाम से विदित है कि 'मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा' अर्थात् यह प्रणाली समाज के सभी वर्गों को बिना किसी बाध्यता के दूर रहकर शिक्षा प्रदान करने वाली प्रणाली है। जब हम दूर रहकर शिक्षा ग्रहण करना चाहेंगे तो निश्चित रूप से तकनीकी माध्यमों (रेडियो, इंटरनेट, कम्प्यूटर आदि) की आवश्यकता होगी यही "मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली" के माध्यम हैं।[7] "मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली" के लिए विभिन्न तकनीक और मीडिया उपलब्ध है। विभिन्न प्रकार के तकनीकी माध्यमों का उपयोग कर शिक्षा प्रदान करना इस प्रणाली की विशेषता है। शिक्षार्थियों के लिए World Wide Websites ने कई स्त्रोत उपलब्ध करवाये हैं जिनके माध्यम से किसी भी जानकारी को घर बैठे बड़े आसानी से समझा जा सकता है।

- **अध्ययन केंद्र-** अध्ययन केन्द्रों की स्थापना इसलिए की जाती है, कि दूरस्थ शिक्षार्थियों को अध्ययन से सम्बंधित सभी सुविधाएँ दी जा सके। यह भी सहायक प्रणाली का अंग माना जाता है। इस प्रकार के केन्द्रों को शिक्षा संस्थान में स्थापित किया जाता है, जिससे दूरस्थ शिक्षा संस्थान की लागत भी कम हो जाती है। अध्ययन केन्द्रों की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं[7]-
  स्थानीय शिक्षण संस्थानों में अध्ययन केन्द्र स्थापित किए जाते हैं जिससे पढ़ने-पढ़ाने का परिवेश शिक्षार्थियों को दिया जा सके।
  - ✓ शिक्षण सामग्री की सुविधाएँ सरलता से मिल जाती हैं।
  - ✓ विभिन्न विषयों के शिक्षक तथा विशेषज्ञों की भी उपलब्धता रहती है।
  - ✓ शिक्षण से कौशल का विकास होता है, जो दूरस्थ शिक्षार्थियों के लिए आवश्यक है।
  - ✓ पाठ्य-वस्तु सम्बन्धी कठिनाइयों तथा समस्याओं का समाधान किया जाता है, जिससे विषय को अधिक सुगम बनाया जा सके।
  - ✓ शिक्षार्थियों को प्रयोगात्मक कार्य करने हेतु अवसर दिया जाता है।
  - ✓ शिक्षार्थियों को समूह में रहकर अध्ययन करने का अवसर मिलता है।[7]
- **प्रिंट मीडिया अथवा मुद्रण पर आधारित माध्यम-** "मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली" में प्रिंट मीडिया सबसे प्रमुख माध्यम है। प्रिंट के प्रकारों में पुस्तकें, नियमावली, पाठ्यक्रम, नोट्स और अध्ययन सामग्री हैं। प्रिंट मीडिया का प्रयोग प्रायः सभी दूरस्थ शैक्षिक पाठ्यक्रमों के लिए किया जाता है।[4,11] भारत तथा दूसरे देशों में "मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली" में लगभग 20 से अधिक माध्यमों का उपयोग किया जा रहा है। ये माध्यम अधिक लोकप्रिय इसलिए हैं क्योंकि इसके अन्तर्गत पाठ्य-पुस्तकें, निर्देश पुस्तिकाएँ, पत्राचार पाठ एवं अन्य सामग्रियाँ सम्मिलित हैं।
  - ✓ **पाठ्य-पुस्तकें-** पाठ्य पुस्तकें पाठ्यक्रम पर आधारित होती हैं। शिक्षार्थी को स्वयं की प्रगति के बारे में प्रतिक्रिया प्राप्त करने हेतु विशेष प्रयास करने की आवश्यकता नहीं रहती है। पाठ्यक्रम से संबंधित समस्त महत्वपूर्ण बिन्दु एक साथ मुद्रित पाठ्य-पुस्तकों में आ जाते हैं। एक शिक्षार्थी पाठ्य पुस्तक का उपयोग कर अपने पाठ्यक्रम से संबंधित सभी महत्वपूर्ण जानकारियों को प्राप्त कर सकता है।[1,5]

- ✓ **निर्देश पुस्तिकाएँ एवं मार्गदर्शन-** निर्देश पुस्तिकाएँ शिक्षकों के प्रतिस्थापक के रूप में कार्य करती हैं क्योंकि इनमें प्रत्येक पाठ्यक्रम के बारे में जानकारी होती है। इनमें चित्र, अभ्यास प्रश्नों के साथ-साथ निर्देश भी दिए होते हैं। "मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली" में चूँकि शिक्षार्थी शिक्षक से दूर रहते हैं अतः निर्देश पुस्तिकाएँ ही शिक्षार्थी का मार्गदर्शन करती हैं।[1,5]
- ✓ **पत्राचार पाठ-** शिक्षक छोटे-छोटे मॉड्यूल्स बनाकर (जिनमें आवश्यक तथ्यों की जानकारी होती है) शिक्षार्थी को उपलब्ध कराते हैं ताकि उसका लाभ शिक्षार्थी को प्राप्त हो सके। संगीत के क्षेत्र में कई प्रकार की पत्र-पत्रिकाएँ जैसे- कला समय, संगीत कला विहार, छायानट तथा संगीत मासिक आदि प्रचलित हैं जिनसे शिक्षार्थियों को अपने विषय को समझने में बहुत सहायता मिलती है।[1,5,10]

- **संपर्क कक्षाएँ-** संपर्क कक्षाओं का सम्बन्ध व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रम से है। इसके अंतर्गत संगीत विषय से संबंधित पाठ्यक्रम पर आधारित कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है। शिक्षार्थियों के विषय से सम्बंधित सभी प्रश्नों के निदान हेतु समय-समय पर प्रेरण कार्यक्रम तथा विशेष परामर्श सत्रों का आयोजन भी किया जाता है। इस तरह की कक्षाएँ शिक्षार्थियों को अपने विषय से सम्बंधित विशेषज्ञों से सीधे संवाद करने की सुविधा प्रदान करती है।[6,11]
- **श्रव्य एवं दृश्य आधारित माध्यम-** इस प्रकार के माध्यमों के अन्तर्गत ऐसे उपकरण सम्मिलित हैं जो सुनने के साथ देखने की भी सुविधा प्रदान करते हैं। शैक्षिक आकाशवाणी, शैक्षिक दूरदर्शन, रेडियो, ऑडियो लेक्चर, वीडियो लेक्चर, तथा ऑनलाइन कार्यशालाएँ आदि इसके उदाहरण हैं।[11]

- ✓ **शैक्षिक आकाशवाणी-** "मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली" के माध्यमों में आकाशवाणी अच्छा एवं उपयोगी माध्यम है। सूचनाओं के प्रसारण, शिक्षार्थियों में कल्पना शक्ति का विकास, शिक्षार्थियों में कुछ रहस्यों के बारे में जिज्ञासा पैदा करना आदि में इसका महत्वपूर्ण स्थान है। रेडियो और विभिन्न प्रकार की एप्लीकेशन का प्रयोग शैक्षिक उपयोग हेतु बहुत वर्षों से किया जा रहा है।
- ✓ **शैक्षिक दूरदर्शन-** वर्तमान समय में दूरदर्शन या टेलीविजन मनोरंजन के साथ-साथ शिक्षा का भी एक प्रभावशाली माध्यम है। श्रव्य–दृश्य उपकरणों में यह सबसे प्रचलित उपकरण है इसके द्वारा विचारों का आदान-प्रदान प्रभावशाली तरीके से होता है। टेलीविजन कार्यक्रम वीडियो फिल्म पर संगृहीत किये जाते हैं और बाद में एक निश्चित समयानुसार प्रसारित किए जाते हैं। आज शिक्षण में टेलीविजन एक प्रभावी माध्यम के रूप में उपयोग किया जा रहा है। इसमें रेडियो व फिल्म दोनों के गुण विद्यमान रहते हैं। इसमें शिक्षार्थी घर पर बैठे-बैठे ही पूरे संसार की जानकारियाँ एवं शिक्षा से सम्बन्धित सभी सूचनाओं को प्राप्त कर सकता है।[7,11]
- ✓ **शैक्षिक रेडियो-** आधुनिक संचार के माध्यमों में रेडियो एक सस्ता एवं जन–सुलभ उपकरण है। जनसंचार के विभिन्न माध्यमों में इसका विस्तार क्षेत्र काफी विस्तृत है। इसके विभिन्न कार्यक्रमों के प्रसारण से सभी आयु वर्ग तथा दूरस्थ क्षेत्रों में रहने वाले लोग लाभान्वित होते हैं। इसकी उपयोगिता की मांग को देखते हुए शिक्षा के उद्देश्य की पूर्ति हेतु इसका प्रयोग एक महत्वपूर्ण अंग बन गया है। रेडियो का प्रयोग कर एक कुशल शिक्षक को अधिक से अधिक लोग सुन व समझ सकते हैं। इसके विपरीत किसी कक्षा में कुछ निश्चित शिक्षार्थी ही इसका लाभ उठा पाते हैं। रेडियो एक रुचिकर माध्यम है जिसके कारण नवीन ज्ञान अर्जन हेतु शिक्षार्थियों के हृदय में उत्साह उत्पन्न होता है। रेडियो एक ऐसा माध्यम है जिसके कार्यक्रमों से शैक्षिक अवसरों की समानता एवं उनके विस्तार में सहायता प्राप्त होती है।[7,11]
- ✓ **ऑडियो लेक्चर-** ऑडियो लेक्चर में पाठ्यक्रम से सम्बंधित लेक्चर रिकार्ड कर रेडियो और विभिन्न एप्लीकेशन के माध्यम से उनका प्रतिदिन प्रसारण किया जाता है। रेडियो लेक्चर के द्वारा शिक्षार्थियों के लिए किसी भी स्थान पर होने से शिक्षा में कोई विधान उत्पन्न नहीं होता है। शिक्षार्थी अपने मोबाइल फोन का प्रयोग करके कहीं भी और कभी भी ये ऑडियो लेक्चर सुन सकता है।
- ✓ **वीडियो लेक्चर-** पाठ्यक्रम से सबंधित वीडियो लेक्चर रिकार्ड कर वेबसाइट, यूट्यूब तथा फेसबुक आदि मीडिया एप्लीकेशन के माध्यम से शिक्षार्थियों हेतु उपलब्ध कराये जाते हैं। जैसा की हम जानते हैं कि संगीत सम्पूर्ण तौर से एक प्रयोगात्मक विषय है। संगीत की बारीकियों को सिर्फ सैद्धांतिक तौर पर सीख पाना मुश्किल है, ऐसे में किसी भी सूचना को प्राप्त करने हेतु वीडियो लेक्चर

एक प्रमुख माध्यम बन जाता है। भारत तथा विदेशों में लगभग सभी विश्वविद्यालयों में ऑडियों एवं वीडियो लेक्चर का प्रयोग किया जाता है। इन माध्यमों में न केवल आवाज को बल्कि आवाज के साथ-साथ चित्रों तथा शिक्षक स्वयं वीडियो लेक्चर की सुविधा के माध्यम से पढ़ाते हैं।[8,10]

- ✓ **ऑनलाइन कार्यशालाएँ-** संगीत एक प्रयोगात्मक विषय है जिसकी बारीकियों को गुरु के मार्गदर्शन में सीखने की अनिवार्यता होती है। ऑनलाइन कार्यशालाओं के माध्यम से प्रयोगात्मक पक्ष की बारीकियों को सिखाने का प्रयास किया जाता है जिससे शिक्षार्थी संगीत की बारीकियों को समझ पाता है। कार्यशालाएँ संगीत विभाग द्वारा समय-समय पर आयोजित की जाती हैं।

निष्कर्ष

"मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली" एक ऐसी प्रणाली है जो वर्तमान शिक्षा जगत के लिए काफी प्रभावशाली सिद्ध हुई है। यह प्रणाली उन सभी ऑनलाइन मीडिया, इंटरनेट एवं तकनीक का प्रयोग करती है जो समाज के सभी वर्गों को शिक्षा का लाभ पहुँचाने में सहायक हैं। "मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली" के कार्यों और शिक्षा प्रदान करने के माध्यमों से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि यह प्रणाली बहुत ही लाभकारी सिद्ध हो सकती है। यह प्रणाली उन शिक्षार्थियों के लिए एक ऐसी व्यवस्था उपलब्ध करा रही है जो किसी भी तरह अपना शिक्षण कार्य औपचारिक माध्यम से करने में सक्षम नहीं हैं। यह प्रणाली व्यक्तिगत समस्याओं के चलते गुरु के समक्ष बैठकर संगीत की शिक्षा ग्रहण करने में असमर्थ शिक्षार्थियों को शिक्षा प्राप्ति के मार्ग में सहायता प्रदान करने का एक प्रयास है।

संदर्भ

1. शर्मा तरुणा. (2015).भारतीय संगीत में दूरस्थ शिक्षा का औचित्य एवं महत्व. कोटा विश्वविद्यालयः https://www.uok.ac.in/notifications/(2)%20Taruna%20Sharma.pdf
2. चैरसिया, ओम प्रकाश, संपा०, 2013, दूरस्थ संगीत शिक्षा, कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली, पृ०-60।
3. मिश्रा संजय, (लेख), 22 सितम्बर 2013, ओपन डिस्टेंस एंड इ-लर्निंग इन इंडिया।
4. अरोड़ा रीता, शैक्षिक तकनीकी, वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा, पृ०-336
5. अरोड़ा रीता, शैक्षिक तकनीकी, वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा, पृ०-338,339
6. उपाध्याय द्विजेश, ड. न. (2017). उच्च शिक्षा में दूरस्थ शिक्षण प्रणाली के माध्यम से भारतीय शास्त्रीय संगीत का शिक्षण- एक समीक्षात्मक विश्लेषण. ग्रन्थालयः, पृ० 229
7. दूरस्थ शिक्षा. Retrieved from उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी, उत्तराखंड, पृ०-9,130,131,195,201,202 https://uou.ac.in/sites/default/files/slm/MAED-204.pdf
8. स्टाफ, क. (2023, नवम्बर 29). दूरस्थ शिक्षा क्या है? प्रकार और लाभ. Retrieved from कौरसेरार: https://www-coursera-org/in/articles/distance&learning
9. services M- f- (2020, फरवरी 18). दूरस्थ शिक्षा. Retrieved from youtube: https://www.youtube.com/watch?v=HoGXL9IVe78&t=3s&pp=ygUl4KSm4KWC4KSw4KS44KWN4KSlIOCktuCkv-CkleCljeCkt-Ckvg%3D%3D
10. दूरस्थ शिक्षा क्या है? दूर से पढ़ाई करने के फायदे. Retrieved from यूनिवर्सिटी ऑफ द पीपल: https://www.uopeople.edu/blog/what-is-distance-learning/
11. Bandey- (2017, अक्टूबर 07). मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का अर्थ, परिभाषा, प्रकृति एवं सिद्धांत. Retrieved from Scotbuzz: https://www.scotbuzz.org/2017/10/durasth-shiksha-ka-prarup-evam-aavashyakata.html